1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यत्र सोमः सदमित्तग भद्रम्।
अथर्व. 7/18/2

जहां शान्तिवर्षक परमात्मा है वहां सदा ही कल्याण है।
Wherever is the divine bestower of peace, there is plenty of prosperity & happiness.

वर्ष 41, अंक 12 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 8 जनवरी, 2018 से रविवार 14 जनवरी, 2018
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें– www.thearyasamaj.org/aryasandesh

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला– 6–14 जनवरी–प्रगति मैदान, नई दिल्ली

वैदिक साहित्य प्रचार–प्रसार का अखण्ड यज्ञ : पूर्णाहुति 14 को

आर्यसमाज का आह्वान : हर हाथ तक पहुंचे अमरग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश"

हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू के साथ-साथ डी.वी.डी.एवं मोबाइल एप्प में भी उपलब्ध है सत्यार्थ प्रकाश

मेले में बाल साहित्य में भी पहुंचा आर्यसमाज : हॉल नं. 7 स्टाल नं. 161

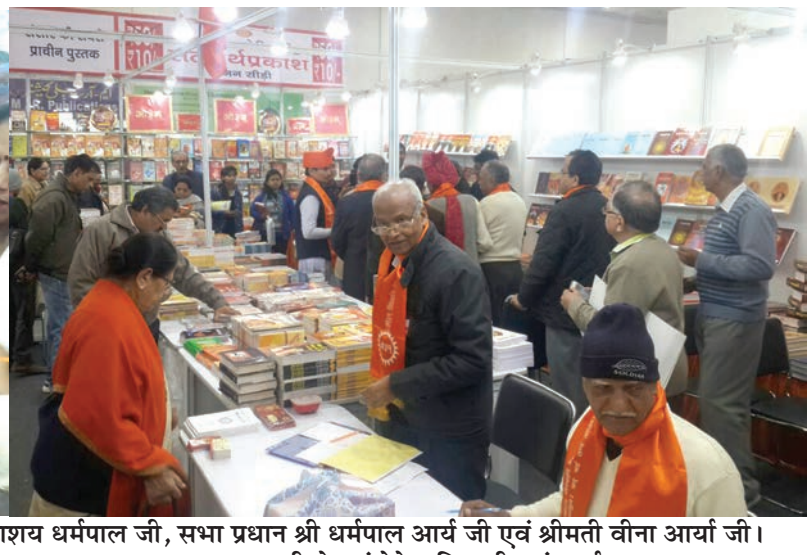

वेद के हिन्दी, अंग्रेजी संस्करणों एवं मनुस्मृति में पुस्तक प्रेमी ले रहे हैं गहरी रुचि

हर पाठक कम से कम एक सहयोगी के साथ मेले में अवश्य पहुंचे – हॉल नं. 12 स्टाल : 282–291

विश्व पुस्तक मेले में आर्यसमाज के साहित्य प्रचार स्टाल का उद्घाटन करते महाशय धर्मपाल जी, सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी एवं श्रीमती वीना आर्या जी। साथ में हैं सैकड़ों की संख्या में पधारे आर्यजन एवं आर्य कार्यकर्ता। इस अवसर पर स्टाल पर अपनी सेवाएं देते अधिकारी एवं आर्यजन।

साहित्यक मंच पर 'यज्ञ एवं पर्यावरण' और 'मनुस्मृति' चर्चा से चर्चित रहा स्टाल

सम्बन्धित समाचार एवं चित्र पृष्ठ 4 पर

पुस्तक मेले में साहित्य मंच से 'यज्ञ एवं पर्यावरण' तथा 'मनु स्मृति' पर विचार व्यक्त करते श्री ईश नारंग जी, डॉ. विवेक आर्य जी एवं सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी। इस अवसर पर मंचस्थ सर्वश्री महाशय धर्मपाल जी, धर्मपाल आर्य जी, प्रेम अरोड़ा जी एवं डॉ. बृजेश गौतम जी तथा जनसाधारण से भरा हॉल।

20 रुपये की विशेष सब्सिडी के साथ हिन्दी सत्यार्थ प्रकाश मात्र 10 रुपये एवं उर्दू सत्यार्थ प्रकाश मात्र 70 रुपये में

अपनी ओर से सत्यार्थ प्रकाश पर सब्सिडी हेतु अधिकाधिक दान करें

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 912010055423646 एक्सिज बैक, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

कृपया राशि जमा कराने के उपरान्त **श्री मनोज नेगी मो. 9540040388** को सूचित करके अपनी डिपोजिट स्लिप डाक द्वारा अथवा aryasabha@yahoo.com पर भेजकर राशि की रसीद मंगा लेवें। सत्यार्थ प्रकाश कम मूल्य पर उपलब्ध कराने के लिए दान देने वाले आर्य महानुभावों एवं आर्यसमाजों की सूची पृष्ठ 7 पर प्रकाशित की गई है। इस मध्ये दान करने वाले समस्त समस्त सहयोगी महानुभावों की सूची आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित की जाती रहेगी।

सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत छूट प्राप्त है। – *महामन्त्री*

वेद-स्वाध्याय

त्यागपूर्वक भोग

यस्यास्त आसनि घोरे जुहोम्येषां बद्धानामवसर्जनाय कम्।
भूमिरिति त्वाभि प्रमन्वते जना निर्ऋतिरिति त्वाहंपरि वेद सर्वतः।। -अथर्व. 6/84/1
ऋषिः **भगः।।** देवता - **निर्ऋतिः।।** छन्दः **भुरिग्जगती।।**

शब्दार्थ - यस्याः ते = जिस तेरे **घोरे आसनि** = घोर मुख में **जुहोमि** = मैं हवन करता हूं कि **एषां बद्धानाम्** = इन स्थूलता के बंधे हुए बन्धनों से **अव सर्जनाय कम्** = छुटकारा पा सकूं, **त्वा** = उस तुझको **जनाः** = मनुष्य तो **भूमिः**[1]= तू भोगों की भूमि है **इति अभिप्रमन्वते** = ऐसा मानते हैं, परन्तु **अहम्** = मैं **त्वा** = तुझे **निर्ऋतिः**[2] = कृच्छ्रापतित्त, भारी विपत् **इति** = ऐसा **सर्वतः** =सब ओर से **परिवेद** = ठीक-ठीक जानता हूं।

विनय- हे निर्ऋते! हे स्थूल जगत् के देवते! तुझमें स्थूल भोग भोगने में मनुष्य बड़ा सुख मानते हैं। वे तेरी इस भूमि पर, इस स्थूल जगत् में खाने-पीने, सन्तान उत्पन्न करने तथा इन्द्रियों के अन्य भोग प्राप्त करने में बड़ा आनन्द पाते हैं और वे इसीलिए जीते हैं। तुझको, तुझरूप इस भूमि (स्थूल जगत्) को, वे सब सुखों की भूमि सब भोगों का आश्रय, सब आनन्दों को पैदा करने वाली मानते हैं, परन्तु मैं तो तुझे निर्ऋति ही समझता हूं, कृच्छ्रापत्ति ही देखता हूं। इस स्थूल जगत् में पड़ा हुआ मैं अपने-आपको एक महान् गहन आपत्ति में फंसा हुआ पाता हूं। सब ओर से मैं एक भारी विपत्ति में फंसा हुआ हूं-यह स्पष्ट देखता हूं। स्थूल जगत् के भोग मुझे सुखदायक नहीं लगते; ये मुझे परिणाम, ताप, संस्कार, आदि सब प्रकार से कलेशरूप लगते हैं; ये मुझे फंसाने वाले, बांधनेवाले, गला घोंटनेवाले लगते हैं। आत्मा स्थूल भोग भोगने के लिए स्थूल देहों को धारण करता है, परन्तु ज्यों-ज्यों वह स्थूलता की ओर जाता है त्यों-त्यों वह परिमित, बद्ध, निरुद्ध, सीमित शक्तिवाला होता जाता है। इस स्थूलतम 'पार्थिव' शरीर को पाकर तो आत्मा बिल्कुल ही बंध गया है। स्थूल शरीर में वह आत्मा इन्द्रियों की प्रणालिका से बाहर कोई ज्ञान नहीं पा सकता और हाथ-पैर आदि से जितना परिचित कर्म किया जा सकता है उससे अधिक कर्म नहीं कर सकता। केवल वह पशु-सुलभ भोग अवश्य भोता है। अहो! हे निर्ऋते! मैं तो ज्ञान और शक्ति के रोकने वाले इस स्थूल बन्धन से घबरा गया हूं। मनुष्य-योनि पाकर मुझे तो अपने आत्मा की बन्धन रहित अवस्था की कुछ स्मृति-सी आ गई है, झलक दीखने लगी है। मुझमें उच्च, विस्तृत, शान्त सुखों की चाह पैदा हो गई। अतएव मैं तो इन स्थूल बन्धनों को तोड़कर उड़ना-सा चाहता हूं, परन्तु ये बंधे हुए बन्धन यूं टूटने वाले भी नहीं हैं। इन्हें इन्हीं के सहारे धैर्य से तोड़ना होगा। अतएव मैं तेरे स्थूल भोगों को त्यागपूर्वक, हवन पूर्वक भोग रहा हूं। खाना-पीना, देखना-सुनना आदि स्थूल भोगों को समर्पण-बुद्धि से करता हुआ मैं अनुभव करता हूं कि इन कर्मों का मैं तेरे घोर = भयङ्कर मुख में हवन कर रहा हूं ये भोग मुझे रमणीय नहीं लगते, किन्तु घोर नरकरूप लगते हैं।

नोट : 1. वेद में 'निर्ऋति' शब्द का अर्थ भूमि भी है (निरमति इति); 2. और इसका अर्थ कृच्छ्रापतित्त बड़ी भारी विपत्ति या पाप भी है।

साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

क्या भारत सच में एक इतिहास बनकर रह जाएगा?

...कोरेगांव युद्ध की सालगिरह पर वैसे तो हर साल पंद्रह-बीस हजार लोगों की भीड़ वहां जमा होती थी, लेकिन इस बार तीन-साढ़े तीन लाख लोग कैसे जमा हो गए? क्या ये कोई सोची समझी साजिश थी या महाराष्ट्र को जातीय हिंसा की आग में झोंकने की पूर्व योजना थी? सामाजिक न्याय के बहाने किस तरह एक बाद एक नेता जन्म ले रहे हैं, इसे भी समझना होगा। ...

होसकता हैं लोगों में उफनती राष्ट्रीय गर्व की भावना का पारा कुछ देर के लिए लुढ़क जाये, झूठे और गर्वीले न्यूज से ओतप्रोत लोग मुझे नकारात्मक समझे। पर मुझे विश्वास है कुछ लोग ऐसे भी जरूर होंगे जो इस सच को स्वीकार करेंगे। क्योंकि बीमारी का इलाज तभी सम्भव होता है जब वह बीमारी मरीज द्वारा स्वीकार कर ली जाती है। इस बात को कौन अस्वीकार कर सकता है कि नेताओं की वजह से आज देश जातिवाद के घोर दलदल में धंसता जा रहा है? सहारनपुर के शब्बीरपुर गाँव में दलित और राजपूत हिंसा की आंच अभी ठीक से ठंडी भी नहीं हुई थी कि अचानक महाराष्ट्र के पुणे से शुरू हुआ जातीय हिंसा का दौर मुम्बई और कई अन्य शहरों तक पहुंच गया है। जगह-जगह पथराव और आगजनी का दौर जारी हुआ, मुम्बई के उपनगरों चेंबूर, कुर्ला, मुलुंड और ठाणे के अलावा हड़पसर और फुरसुंगी में पथराव और आगजनी की कई घटनाएं हुईं। कई जगह दुकानों और ऑफिसों को आग के हवाले कर दिया गया।

ऐसे में जानना जरूरी है कि ये सारा विवाद है क्या और क्यों? अचानक महाराष्ट्र प्रतिशोध की आग में धधकने लगा है? महाराष्ट्र के पुणे में यह सारा विवाद अंग्रेजों और पेशवाओं के बीच हुए युद्ध के 200 साल पूरे होने को लेकर हुआ है। जिसमें एक जनवरी 1818 में अंग्रेजों ने दलितों की सहायता से पेशवा द्वितीय को शिकस्त दे दी थी। पुणे के कोरेगांव के जय स्तंभ पर हर साल यह उत्सव मनाया जाता है। दलित इसे शौर्य दिवस के तौर पर मनाते हैं और मराठाओं की ओर से हर साल इसका छुटपुट विरोध होता रहा है। लेकिन इस साल युद्ध के 200 साल पूरे होने पर दलितों की ओर से इस बार भव्य आयोजन किया जा रहा था जिसमें 5 लाख से ज्यादा लोगों के जुटने की बात की जा रही थी। खास बात ये है कि यह देश का इकलौता युद्ध है जिसमें अंग्रेजों की जीत का जश्न मनाया जाता है।

जातिगत हिंसा की बात करें तो बीते पिछले कुछ महीनों में गुजरात में पटेल आन्दोलन हुआ ये भी जाति के नाम पर था। हरियाणा में जाट आन्दोलन हुआ था, सरकारी और निजी संपत्तियों को आग के हवाले किया गया। इसमें भी आगजनी और हिंसा का वही तांडव दोहराया गया जिसके बाद हार्दिक पटेल नाम से एक नेता सामने आये। इसके बाद गुजरात में ऊना से कथित गौरक्षक दलों द्वारा कुछ दलितों की पिटाई के बाद देश में जो हुआ सब जानते हैं। इस आन्दोलन से जिग्नेश मेवाणी का जन्म हुआ तो उत्तरप्रदेश में दलित, राजपूत हिंसा महाराणा प्रताप की शोभायात्रा के बाद भी एक दलित नेता चन्द्रशेखर रावण का जन्म भी इसी जातिवाद की कोख से ही हुआ था।

इस देश में अन्दर ही अन्दर बहुत कुछ हो रहा है। रोहित वेमुला की 'आत्म-हत्या' पहले कन्हैया और 'राष्ट्रवाद' फिर ऊना कांड, कुछ सुलग रहा है जो कभी-कभी फूटता है तो कभी अंदर-अन्दर ही दहक रहा होता है। अभी सब कुछ शांत नहीं हुआ कि अगली आग की तैयारी की जा रही है। हाल ही में पांच दिसंबर को कई दलित संगठन अशोक भारती के नेतृत्व में आंध्र प्रदेश भवन में राष्ट्रीय दलित महासभा कर रहे थे। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य शब्बीरपुर गांव के दलितों को न्याय दिलाने के साथ-साथ भीमआर्मी के संस्थापक चंद्र शेखर रावण, शिव कुमार प्रधान, सोनू समेत अन्य की जेल से रिहाई की आवाज को बुलंद करना है।

कोरेगांव युद्ध की सालगिरह पर वैसे तो हर साल पंद्रह-बीस हजार लोगों की भीड़ वहां जमा होती थी, लेकिन इस बार तीन-साढ़े तीन लाख लोग कैसे जमा हो गए? क्या ये कोई सोची समझी साजिश थी या महाराष्ट्र को जातीय हिंसा की आग में झोंकने की पूर्व योजना थी? सामाजिक न्याय के बहाने किस तरह एक बाद एक नेता जन्म ले रहे हैं, इसे भी समझना होगा। सामाजिक न्याय के विचार का पानी कथित जातिवादी नेता झोली में लिए चल रहे हैं जो कभी बिखरता है तो कभी हिंसा के लाल रंग में मिल जा रहा है। हमने शब्बीरपुर की घटना के बाद भी पूछा था कि भारत के चुनावी बाजार में राजनीतिक निर्माताओं द्वारा तैयार किए गए और एक दूसरे से आगे बढ़कर दिए जा रहे बयान क्या कभी सामाजिक समरसता का सपना पूरा होने देंगे? हमें नहीं लगता क्योंकि ऐसी घटनाओं के बाद यह लोग एक-दूसरे के विरुद्ध बड़े मोटे-मोटे शीर्षक देकर लोगों की भावनाएं भड़काते हैं और परस्पर सिर फुटौवल करवाते हैं। एक-दो जगह ही नहीं, कितनी ही जगहों पर इसलिए दंगे हुए हैं कि स्थानीय अखबारों ने बड़े उत्तेजनापूर्ण लेख लिखे हैं। इस समय ऐसे लेखक बहुत कम हैं, जिनका दिल व दिमाग ऐसे दिनों में भी शांत हो। दूसरा सोशल मीडिया पर भ्रामक प्रचार भी ऐसे माहौल में आग में घी का काम करता दिखाई देता है।

इस जश्न के भी मूल उद्देश्य उसकी गर्वीली परत हटाकर देखें तो कुछ यूँ देखिये कि आज से 200 साल पहले अंग्रेजों ने दलितों की सहायता से पंडित पेशवाओं को हराया था। शनिवार वाडा में जो अंग्रेजी पताका फहराई गयी थी उसमें दलित समुदाय के लोगों का साथ था। हालाँकि अब न वह युद्ध जीतने वाले अंग्रेज रहे, न म्हारसेना के वह सिपाही और न ही पेशवा और उनके उच्च पद। लेकिन लोग हैं कि इतिहास से गौरव और अपमान के कुछ पल बटोरकर, आज के आजाद और संवैधानिक भारत में हिंसा का तांडव मचा रहे हैं। इसमें कोई एक समुदाय दोषी नहीं बल्कि हर एक वह समुदाय दोषी है जो इतिहास से आज भी जातीय गर्व की भावना ढूंढकर दूसरों को चिढ़ाते हैं, नीचा दिखाते हैं, इसमें शनिवार वाडा में शौर्य दिवस मनाने वाले भी उतना ही दोषी हैं जितना परशुराम जी वे भक्त जो गर्व से उन्हें भगवान का दर्जा देकर सीना ठोकते हुए कहते हैं कि परशुराम जी ने 21 बार पृथ्वी क्षत्रीय विहीन कर दी थी। यदि हिन्दू समाज में आपसी युद्ध को वे गर्व मानते हैं तो आज वे दलितों के जश्न से अपमानित क्यों होते हैं? मेरा उद्देश्य किसी की कमजोर भावनाओं पर वार करना नहीं है पर क्यों न सामाजिक समरसता राष्ट्रीय एकता, अखंडता बनाये रखने के लिए इन एतिहासिक सच्चे झूठे प्रमाणित अप्रमाणित गर्वों को अब पीछे छोड़ दिया जाये? एक नया हिन्दुस्तान बनाया जाये वरना ऐतिहासिक गर्व की भावना के चक्कर और वोट की राजनीति में भारत देश ही एक अलग इतिहास बनकर रह जायेगा। -***सम्पादकीय***

कहां गया कथित नारीवाद अब?

....इन तथाकथित नारीवादियों की बहस का ढ़ोंग सिर्फ रात में घूमने, कपड़े, आजादी, लिव इन रिलेशनशिप तक ही सीमित हो जाता है। इनके इस ढ़ोंग को जब एक गाँव देहात की लड़की देखती सुनती है वह समझती है अब हमें कोई दिक्कत नहीं है। वह बाहर निकलती है विश्वास करती है, प्रेम करती है, घर वालों धता बताकर निकल जाती है उसे क्या पता कदम-कदम पर उसकी स्वतन्त्रता पर घात लगाने को शिकारी बैठे हैं।.....

पिछले दिनों एक सवाल के लिखित जवाब में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडनवीस ने बताया था कि वर्ष 2016 में 1 जनवरी से 30 जून के बीच 2,881 लड़कियां लापता हुई थीं। इस साल इस अवधि में यह संख्या बढ़कर 2,965 हो गई है। हालाँकि राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के जारी किए गए आंकड़ों के मुताबिक, देश में हर आठ मिनट में एक लड़की गायब हो रही है। नेशनल क्राइम ब्यूरो का रिकॉर्ड बताता है कि बिहार में वर्ष 2016 में 3037 लड़कियां गायब हुई। 1587 लड़कियों के गायब होने के पीछे का कारण लव अफेयर बताया गया। इसमें अधिसंख्य गरीब परिवार की हैं। ये लड़कियां कहां और किस हाल में हैं, किसी को नहीं पता। हो सकता है कुछ तो इनमें कहीं देह व्यापार की गन्दी गलियों में जिल्लत भरी जिंदगी जी रही हो या फिर हो सकता है दुनिया में ही नहीं हो?

अब कमाल देखिये! (जेएनयू) से गायब एक छात्र नजीब अहमद के मामले की जांच तत्काल प्रभाव से सीबीआई को सौंप दी जाती हैं पर देश में लाखों की संख्या में गायब हो रही बेटियों पर मीडिया चूं तक नहीं करता क्यों? चलो इन्हें भी छोड़ दें तो पिछले दिनों की एक घटना को लीजिये मामला था दिल्ली से मुम्बई जा रहीं बॉलीवुड की यंग एक्ट्रेस जायरा वसीम के साथ हुई छेड़खानी की घटना का। इस घटना को देश में महिलाओं की सुरक्षा को लेकर गिर रहे सुरक्षा प्रबन्धों के स्तर का ये एक बड़ा उदाहरण बताया गया था। इससे पहले की एक दूसरी घटना जब हरियाणा में वर्णिका कुंडू की गाड़ी का पीछा आधी रात को एक बड़े नेता के बेटे ने किया था। इन दोनों खबरों ने देश में ऐसा धमाल मचाया कि महिला सुरक्षा के नाम पर सच्चे रोने वालों से झूठे रोने वाले बाजी मार ले गये। नारीवादी लोग आँखों में आंसू भरकर सामने आये, खूब ट्वीट हुए, न्यूज रूम में बहस हुई, नारी सुरक्षा, नारी मुक्ति, नारी स्वतंत्रता की खूब बात भी हुई। हमेशा की तरह पुरुष समाज को कोसा गया, शो के बीच-बीच में विज्ञापन में अर्धनग्न लड़की परोसी गयी शो खत्म।

बात और आंकड़े यही खत्म नहीं होते साल 2014 लेकर अगस्त 2017 तक फरीदाबाद और पलवल जिले से तकरीबन 770 महिलाएं लापता हैं। जिसमें ज्यादातर महिलाएं गरीब तबके से हैं। एनसीआरबी के अनुसार छत्तीसगढ़ में वर्ष 2008 से 2011 तक कुल 17365 युवतियां गायब हुई हैं तो वर्ष 2016-17 मध्यप्रदेश से 75 महिलाएं रोजाना प्रदेश में गायब हुई हैं। आंकड़ों पर नजर डालें तो पूरे साल के दौरान अकेले मध य प्रदेश में ही 4 हजार 882 मामले सामने आए। यही नहीं नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरो के साल 2016 के आंकड़े एक चौंकाने वाली जानकारी का खुलासा कर रहे हैं कि बीते साल बिहार में 3037 अल्प वयस्क लड़कियां गायब हुई।

वर्ष 2012 में जहां ऐसी महिलाओं की तादाद 34 हजार थी, वहीं 2015 में यह तादाद चार गुना से भी ज्यादा बढ़ कर 1.35 लाख तक पहुंच गई है। 2014 के आंकड़ों के मुताबिक, सबसे ज्यादा 21,899 महिलाएं महाराष्ट्र से गायब हुई थीं। 16,266 के साथ पश्चिम बंगाल दूसरे नम्बर पर था जबकि 15 हजार के साथ मध्य प्रदेश तीसरे पर, देश की राजधानी दिल्ली में भी इस दौरान 7500 महिलाएं गायब हुई। इस सूची में कर्नाटक 7,119 पांचवें नम्बर पर रहा। केरल की बात छोड़ दीजिये वरना साम्प्रदायिकता का टैग लग जाएगा। पर सवाल जरूर है कि आखिर देश की बेटियां जा कहां रही हैं? क्या इनका कभी पता चल पाएगा? ज्यादातर लड़कियां स्कूल-कॉलेज या कोचिंग आने-जाने के दौरान ही गुम हो जा रही हैं। अगर इनके साथ पुलिस के पास तक नहीं पहुंचने वाले मामलों को भी जोड़ लें तो तस्वीर का रूप भयावह नजर आता है।

इन तथाकथित नारीवादियों की बहस का ढ़ोंग सिर्फ रात में घूमने, कपड़े, आजादी, लिव इन रिलेशनशिप तक ही सीमित हो जाता है। इनके इस ढ़ोंग को जब एक गाँव देहात की लड़की देखती सुनती है वह समझती है अब हमें कोई दिक्कत नहीं है। वह बाहर निकलती है विश्वास करती है, प्रेम करती है, घर वालों को धता बताकर निकल जाती है उसे क्या पता कदम-कदम पर उसकी स्वतन्त्रता पर घात लगाने को शिकारी बैठे हैं। आखिर एक नजीर अहमद की घटना पर सड़कों पर उतरकर विरोध प्रदर्शन करने वाले लोग कहाँ चले जाते हैं। हम यह नहीं कहते वह प्रदर्शन गलत है बिल्कुल सही है लेकिन लगातार देश से गायब हो रही इन बेटियों के लिए भी तो कोई आवाज उठनी चाहिए.?

आखिर एक रेप की घटना पर सड़कों पर उतरकर 'वी वांट फ्रीडम' कहने वाली महिलाओं और नारीवादियों की भीड़ इन आंकड़ों पर कहाँ गायब हो जाती है, एक लोकतान्त्रिक देश में अपनी मांग रखने और स्त्री-पुरुष में समानता की बहस होनी चाहिए। लेकिन इसके उलट इन आंकड़ों और तथ्यों की तरफ न तो लड़कियों का ध्यान है, न शिक्षाविदों का, न सुधारकों का, न संविधान का तथा न ही न्यायपालिका का। लड़कियां व महिलाएं आज लड़के व पुरुष बनने के पीछे पागलपन में खोती जा रही हैं। क्या यह अपने अस्तित्व के साथ धोखा नहीं है? कहीं ऐसा तो नहीं हैं कि एक दो घटना पर मचा शोर कई सौ घटनाओं को चुप करा देता है? महिलाओं के सशक्तिकरण पर बिल्कुल बहस होनी चाहिए बशर्ते इसमें सभी महिलाएं शामिल हो, पर करेगा कौन? भारत में बेची जाने वाली 60 फीसदी लड़कियां वंचित और उपेक्षित वर्ग से आती हैं। अधिकतर मामलों में शादी या नौकरी के बहाने उनकी तस्करी की जाती है। इसके बाद आता है प्रेम जिसके लिए हिन्दी सिनेमा में गाने बने कि 'अब तीर चले तलवार चले मैंने पकड़ ली कलाई यार की।' लेकिन गायब होने वाली इन लड़कियों में से 16 मिलियन लड़कियों को अब तक देश विदेश के देह व्यापार में धकेला जा चुका है। कहीं वह यार कलाई छोड़ या मरोड़ तो नहीं रहा है? या जिस्म के बाजार में इस कलाई की कीमत वसूल रहा हो?

- राजीव चौधरी

बोध कथा

जीवन कटे बिन साथी ना

गतांक से आगे -

जब भी वह उसे साथी कहकर पुकारता, तभी वह दौड़ी हुई उसके पास आ जाती। ऐसा प्यार हो गया उसे बकरी से कि उसके बिना वह एक क्षण भी नहीं रह सकता था। हर समय वह और उसका साथी, हर समय रामदास और बकरी। वह अब प्रसन्न था कि कोई अपना मिल गया। प्रसन्न था कि उसका साथी उसके पास है। परन्तु एक दिन वह बकरी पता नहीं कहां खो गई। रामदास ने उसको 'साथी-साथी' कहकर पुकारा। वह आई नहीं। पागलों की भांति वह इधर-से-उध ार और उधर-से इधर दौड़ने लगा। 'साथी! ओ साथी!' कहकर पुकारने लगा। प्रत्येक व्यक्ति से पूछने लगा-''तुमने मेरे साथी को देखा है?''

किसी ने पूछा-''कौन साथी?''

रामदास बोला-''मेरी बकरी। लाल रंग की है, इतनी-सी।''

उस व्यक्ति ने कहा-''ऐसी एक बकरी गांव के परली ओर खेतों से भागी जाती मैंने देखी थी।''

रामदास ''साथी! साथी!'' पुकारता हुआ उस ओर भागा। वहां भी बकरी नहीं मिली तो दूसरे गांव की ओर भागा। दौड़ता जाता, पुकारता जाता-''साथी, ओ मेरे साथी, तुम कहां हो?'

तभी मार्ग में वे महात्मा मिले, जिन्होंने उसे भगवान् का नाम जपने के लिए कहा था। आश्चर्य से उन्होंने पूछा- 'अरे रामदास! तुझको यह क्या हुआ? क्या अवस्था बना रखी है तूने? किसको ढूंढता है?'

रामदास ने रोते हुए कहा-'मेरा साथी खो गया है गुरु जी! मैं उसके बिना पागल हुआ जाता हूं। मुझे कुछ नहीं सूझता। आपने कहीं मेरे साथी को देखा है?'

महात्मा ने पूछा-''परन्तु तेरा साथी है कौन?''

रामदास ने रोते हए कहा-'एक बकरी है, गुरु जी! लाल रंग की बकरी।'

महात्मा ने हंसते हुए कहा-'धत्तेरे की! अरे बकरी को तूने अपना साथी बना लिया है बेटा! रामदास के स्थान पर बकरीदास बन गया? अरे पागल, तेरा वास्तविक साथी तो तेरे अन्दर है, जो कभी तेरा साथ नहीं छोड़ता। जिस प्रकार तू बकरी के लिए बेचैन है, उसी प्रकार यदि उस सच्चे साथी के लिए बेचैन होता तो तेरे कल्याण के द्वार खुल जाते।' यह है साथी की कथा!

परन्तु, अरे ओ रामदास को बकरी दास कहने वालो! तुम भी तो सोचो कि तुम किसके दास बने जाते हो? कहीं मकानदास, कहीं नौकरीदास, कहीं धनदास, कहीं मनदास, कहीं पत्नीदास, कहीं पुत्रदास। अरे! यह कितनों को साथी समझ बैठे तुम? वास्तविक साथी को जानो! उस साथी को पाने के लिए स्वाध्याय और सत्संग करो।

दीप जले बिन बाती ना।
जीवन कटे बिन साथी ना।।

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

प्रथम पृष्ठ का शेष

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला- 6-14 जनवरी-प्रगति मैदान, नई दिल्ली

दिल्ली के प्रगति मैदान में दिनांक 6 जनवरी 2018 में 40वें विश्व पुस्तक मेले में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के स्टाल नं. 282 से 291 हॉल नं. 12-12ए पर महाशय धर्मपाल (चेरयमैन एम.डी.एच. ग्रुप व प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा) तथा श्रीमती वीणा आर्या व श्री धर्मपाल आर्य, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा उपस्थित गणमान्य की उपस्थिति में मेले का शुभारम्भ हर्षोल्लास व सौहार्दपूण वातावरण में वेद प्रचार हेतु किया गया। हॉल नं. 8 साहित्य मंच से ''यज्ञ और पर्यावरण'' विषय पर श्री ईश नारंग व श्री विनय आर्य ने यज्ञ पर वैज्ञानिक शोधें और पर्यावरण संतुलन पर इसका प्रभाव दर्शाते हुए अपने-अपने उद्बोधन में उपस्थित जनसमुदाय के समक्ष अपने तर्क संगत विचार प्रकट किये कि 'आज के समय में पर्यावरण शुद्धि के लिए एक मात्र विकल्प हमारे ऋषियों द्वारा आदिकाल से यज्ञ की परम्परा कायम है जो आज भी उतना ही तर्क संगत व आवश्यक है जितना आदि काल में था।' स्टालों की सजावट, पुस्तकों के क्रम व सुन्दर व्यवस्था हेतु सभी कार्यकर्त्ताओं को महाशय धर्मपाल जी ने अपना आशीर्वाद दिया जिन्होंने गत कई दिनों से परिश्रम कर इन्हें आकर्षक बनाया और निरंतर अपनी सेवाएं 14 जनवरी तक प्रदान करेंगे।

आर्यसमाज के वृहद स्टाल का दृश्य: शंका समाधान कक्ष - सत्यार्थ प्रकाश 10-10 रुपये में आवाज लगाकर बेचते आर्यकार्यकर्ता एवं स्टाल पर अपनी सेवाएं देते सभा के उप प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य जी।

महाशय धर्मपाल जी 7 जनवरी 2018 को पुन: पुस्तक मेला में कार्यकत्ताओं को प्रोत्साहित करने लिए उपस्थित हुए तथा बाल साहित्य स्टाल नं 161 हॉल नं. 7 पर भी पहुंचकर कार्यकर्त्ताओं को आशीर्वाद व शुभकामनाएं प्रदान कीं। हॉल नं. 8 साहित्य मंच से डॉ विवेक आर्य द्वारा 'मनुस्मृति' पर अपना ओजस्वी उद्बोधन में प्राचीन वर्णव्यवस्था को आज भी उतना ही तर्क संगत बताया जितनी प्राचीन समय में थी क्योंकि यह व्यवस्था कर्म व्यवस्था पर आधारित है न कि जन्म व्यवस्था से निर्धारित होती है।

उद्घाटन समारोह के अवसर पर सर्वश्री प्रेम अरोड़ा, विनय आर्य, ईश नारंग, ओम प्रकाश आर्य, शिव कुमार मदान, बलदेव राज, अजय सहगल, राजेन्द्र दुर्गा, ऋषि राज, अजय तनेजा, श्रीमती विद्यावती आर्य, श्रीमती सुषमा, श्रीमती उषा किरण, श्रीमती तृप्ता, दयाप्रसाद वैद्य, चतर सिंह नागर, जगदीश लाल भाटिया, वेद व्रत आर्य, किशन कुमार, देवेन्द्र सचदेवा, शीश पाल आर्य, सुभाष कोहली, प्रेम शंकर मौर्य, क्षेत्र पाल आर्य, धर्मेन्द्र आर्य, एस. पी. सिंह, प्रद्युम्न आर्य, जवाहर भाटिया, अशोक गुप्ता, सुरिन्द्र चौधरी, योगेश आर्य, मानधाता सिंह आर्य, आचार्य दिनेश, आचार्य नवीन, रवि प्रकाश आदि आर्यजन उपस्थित थे।

- सुखबीर सिंह आर्य, संयोजक

बाल साहित्य स्टाल में बच्चों के साथ महाशय धर्मपाल जी, सभा उप प्रधान श्री शिव कुमार मदान जी एवं श्री अजय तनेजा जी।

साहित्य मंच से चर्चा के उपरान्त सिख बन्धु को मनुस्मृति भेंट करते महाशय धर्मपाल जी, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, डॉ. विवेक आर्य जी। साथ में डॉ. बृजेश गौतम जी।

इस प्रकार करनी होती हैं बड़ी व्यवस्थाएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा अपने सीमित संसाधनों और आप सभी दानी महानुभावों के सहयोग से प्रतिवर्ष विश्व पुस्तक मेले एवं राष्ट्रीय पुस्तक मेलों में न केवल सम्पूर्ण हिन्दू समाज की अपितु आर्यसमाज की ओर से महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज कराती है। इस पुस्तक मेलों में प्रचार कार्य आसान नहीं। जनवरी में लगने वाले इस पुस्तक मेले के लिए अक्तूबर-नवम्बर से कार्य आरम्भ किया जाता है, तब कहीं जाकर विश्व पुस्तक मेले के इस 9 दिवसीय प्रचार यज्ञ में प्रचार कार्य दिखता है-

स्टाल बुकिंग : प्रतिवर्ष आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से 10 हिन्दी तथा 1 अंग्रेजी स्टाल की बुकिंग लगभग 5.5 लाख रुपये।

साज-सज्जा : आर्य केन्द्रीय सभा के सहयोग से स्टाल की साज-सज्जा। पुस्तकें रैक में सजाने के लिए श्री रविप्रकाश व सत्य प्रकाश पूरी राज वहीं रहते हैं।

दैनिक खर्च/वाहन/भोजन व्यय : मेले में सेवारत 25-30 आर्य कार्यकर्ताओं के भोजन बनाने, मेले लेकर जाने तथा वापस आने, परोसने आदि पर व्यय।

नि:शुल्क वितरण साहित्य: जन साधारण में निशु:ल्क वितरण के लिए लघु साहित्य, पत्रकों, पुस्तक सूची का प्रकाशन।

शंका समाधान-विद्वान : किसी शंका के निवारण/विषय की जानकारी के लिए विद्वानों की व्यवस्था। **समयदानी कार्यकर्ता :** मेले के 9 दिन 25 से 30 कार्यकर्ता पूरी लगन से 12 से 14 घंटे नियमित उपस्थित रहते हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा समस्त सहयोगी, समय दानी महानुभावों एवं आर्य कार्यकर्ताओं का हार्दिक धन्यवाद एवं आभार व्यक्त करती है।

विश्व पुस्तक मेले में आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की उत्तराधिकारिणी परोपकारीणी सभा के वैदिक पुस्तकालय, अजमेर का भी स्टाल लगा हुआ है। यहां से भी लोग सत्यार्थ प्रकाश एवं अन्य साहित्य ले रहे हैं।

पुस्तक परिचय

Know Thy Vedas

Learn the wisdom of the Vedas, the World's First Book
"Know thy Vedas' gets you started quickly
Just the facts
No extra clutter, no extra reading . to the point and in a simple language
Vedas are the oldest book found in the human library. This knowledge is divine and from the beginning of the human race, so that nobody is deprived of this knowledge it will be unjust of the creator of the universe to create this wonderful and intellectual creation and not to provide the road map for human journey on this earth.

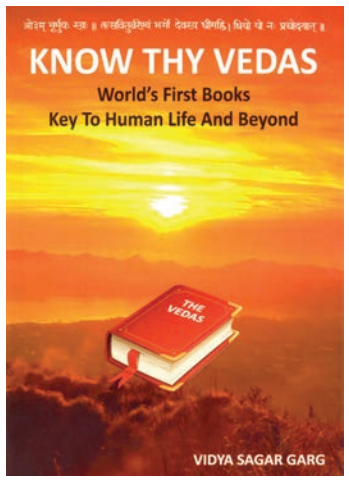

पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें:-
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, मो. नं. 9540040339

पूर्व प्रधानमन्त्री चौधरी चरणसिंह जी के 115वें जन्मदिवस पर यज्ञ

सुप्रसिद्ध आर्यसमाजी नेता, किसानों के मसीहा एवं भारत के पूर्व प्रधानन्त्री स्व. चौधरी चरण सिंह जी के 115वें जन्मदिवस के पर उनके समाधि स्थान किसानघाट पर 23 दिसम्बर, 2017 को आर्यपुरोहित सभा के प्रधान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ किया गया। यज्ञमान के रूप में चौधरी साहब के सुपुत्र चौधरी अजीत सिंह एवं पौत्र जयन्त चौधरी रहे। वेद पाठ आचार्य अभयदेव शास्त्री, श्री विवेक आर्य एवं श्री अंकत आर्य ने किया। - ***जय प्रकाश शास्त्री***

मातृशक्ति

व्यवहार

गतांक से आगे -

आदर्श दिनचर्या : 1. ब्रह्ममुहूर्त में उठना, अपने शरीर, मन, आत्मा को स्वस्थ, निर्विकार तथा बलवान् बनाने के लिये और दीर्घजीवी बनाने के लिये प्रात: ब्रह्ममुहूर्त में उठना परमावश्यक है। शरीर शास्त्रियों ने कहा है- **ब्रह्मे मुहूर्त्ते उत्तिष्ठेत् स्वस्थो रक्षार्थमायुष:।** अर्थात् जो मनुष्य अपने को स्वस्थ तथा बलवान बनाना चाहता है और जो अपनी आयु को सुखमय और दीर्घजीवी बनाना चाहता है, उसे प्रात: ब्रह्ममुहूर्त में अवश्य उठना चाहिए। एक अंग्रेज कवि ने कैसा सुन्दर कहा है-

Early to bed and early to rise, makes a man Healthy, Wealthy and Wise. अर्थात् - जो व्यक्ति प्रात:काल ब्रह्ममुहूर्त में उठता है, वह स्वस्थ, धनवाान् व बुद्धिमान होता है।

"प्रात: उठने से शरीर स्वस्थ, सुखी, नीरोग तथा फुर्तीला बनता है। चित्त प्रसन्न रहता है। आलस्य दूर भागता है। बुद्धि निर्मल तथा कुशाग्र बनती है। उस समय शान्ति का साम्राज्य होता है। इसलिए सुशुम्ना नाड़ी ब्राह्ममुहूर्त में स्वयं ही चलने लगती है तथा सुशुम्ना के चलने के कारण मन में सात्विक वृत्तियों तथा दैवी विचारों का उदय होता है। तामसी तथा राजसी वृत्तियों का शमन होता है।" इसीलिये ऋग्वेद में कहा है- आमिनन्ति दैव्यानि व्रतानि। अर्थात् "यह उषाकाल दिव्य व्रतों को जन्म देने वाली है।"

अत: प्रात:काल किये गये कार्य थोड़े ही समय में तथा भली प्रकार पूर्ण हो जाते हैं। कठिन से कठिन विषय भी प्रात: विचार करने से शीघ्र हृदयंगम हो जाते हैं। ईश्वर-भक्ति आत्म-चिंतन, ध्यान, धारणा तथा स्वाध्याय करने का भी यही एक सर्वोत्तम समय है। प्रात: शीघ्र न उठने से शरीर में आलस्य तथा भारीपन आ जाता है। अपान वायु विकृत हो जाती है, पेट में गुड़गुड़ाहट तथा दर्द होने लगता हे। शौच खुलकर नहीं आता। प्रात: न उठनेवाला मनुष्य आलसी, दरिद्री, हठी, दुराग्रही तथा कलुषित विचारों वाला बन जाता है। अत: शारीरिक और मानसिक रोगों तथा बुराइयों से बचने के लिये और अपने शरीर को सदा स्वसी, बलवान् तथा नीरोग बनाये रखने के लिये प्रात:काल ब्रह्ममुहूर्त में उठना हमारे लिए परमावश्यक है। इसलिए यदि आप चाहते हैं कि हम कभी बीमार न पड़े, सदा स्वस्थ, नीरोग और बलवान् बने रहें और यह गार्हस्थ्य जीवन सदा सुख और शान्तिमय बीते, यदि आपकी यह प्रबल अभिलाषा है कि हम अकाल में ही काल के ग्रास न बनकर चिरायु हों और अपना स्वार्थ व परमार्थ दोनों सरलतापूर्वक सम्पन्न कर सकें तथा इस अमूल्य मनुष्य जीवनरूपी सुन्दर वृक्ष के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, इन चारों फलों को प्राप्त कर सकें तो देर से उठने की बुरी आदत को एकदम छोड़कर सदा प्रात: काल ब्राह्ममुहूर्त में ही उठने का अभ्यास कीजिये।

ब्रह्ममुहूर्त में उठने के बाद सबसे पहले हमें क्या करना चाहिए इस विषय में हम आर्य सन्देश के अगले अंक में बताएंगे।

आदर्श गृहस्थ जीवन : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

अवश्य देखें आर्यसमाज की वैबसाइट

अपने विवाह योग्य बच्चों का आर्यसमाज मैट्रीमोनी पर पंजीकरण कराएं : आर्य परिवार का रिश्ता पाएं

उच्च आय वर्ग एवं उच्च शिक्षित प्रोफेशनल आर्य युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

पंजीकरण शुल्क : 800/- रु. दिनांक : 4 फरवरी, 2018
स्थान : आर्यसमाज बी ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058
पंजीकरण फार्म सभा की वैबसाइट www.thearyasamaj.org पर उपलब्ध है।

दोपहर 2 बजे से 6 बजे तक

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग करें

निवेदक

महाशय धर्मपाल	सुरेन्द्र कुमार रैली	सतीश चड्ढा	अरुण प्रकाश वर्मा
प्रधान	व. उप प्रधान	महामन्त्री	कोषाध्यक्ष

आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य) - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है।
- सम्पादक

Veda Prarthana - 25

Respect Others and Join Them to Promote Prosperity in the Society

- Acharya Gyaneshwarya

ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वि यौष्ट
संराधयन्तः सधुराश्चरन्तः।
अन्योऽन्यस्मैं वलगु वदन्त एत
सध्रीचीनान् वः संमनसस्कृणोमि।।

Jyayaswantah chittinah ma vi yowshta samradhayantah sadhurashcharanta. Anyah anyasmai valgu vadantah eta sadhrichinan vah sammanasah kranomi.

(Atharva Veda 3.30.5)

God's message to human beings, listen!

Jyayaswantah Be respectful of elders and the learned, chittinah be thoughtful with a resolute mind, samradhayantah work in union i.e. be helpful to others, ma vi yowshta do not be in disunion, or an obstacle in others progress, sadhurashcharanta instead be in step with each other to progress in life. Valgu vadantah anyah anyasmai eta talk to each other in a truthful and sweet voice, vah I (God) will help you if you make effort, sadhrichinan so you may work together, sam manasah kranomi and have similar minds and thoughts for progress in your life.

God in this Veda mantra gives us several advices on how to make ourselves, our families, society and nation happier and more prosperous. The first method is to respect and honor our parents, elders, and especially those who are learned virtuous gurus/teachers; we do so by following their aadvice and teachings unless the advice or teachings are bad or morally wrong. We should learn from their life experiences including the hardships they had to deal with and the obstacles or roadblocks they had to overcome along the way to succeed in life. This experience one can obtain by living with and caring for our elder parents and serving the needs of our teachers at school.

The second method is to always be thoughtful, have patience and determination as well as do our best to make wise decisions rather than act impulsively. Before starting or doing something we should deeply and seriously think and evaluate in our minds what will be the consequences of our actions on ourselves, our families, society and the nation as well as would the result be good, positive and worthwhile or would they be bad and negative. Thus we are more likely to achieve success rather than failure.

The third message of the mantra is to be united within our families and join other like minded persons because when we are united even difficult virtuous tasks tasks become easy to complete. While a person has more freedom when he is trying to complete a task alone, however, many virtuous tasks require input and help form others; otherwise eiter the task never gets done, or the work is not executed competently and the results are less than optimal. When families live together jointly including father, mother, children and grandparents, we are able to save more money, be more secure, children learn from the wisdom of grandparents as well as the families have more happiness and honor in the community. When parents split up, divore or families are broken, it is hard to accomplish the above goals.

The fourth thing the mantra advises is that we should not be contented with our own progress and prosperity only but we should also help others in their progress and prosperity. When family members give first opportunity to other members of the family in their progress, then that family develops deeper trust, faith and bonding to each other as well as such actions promote happiness, harmony and peace in the family. When we extend the same attitude to our extended family and the community then it makes them also happier and peaceful. When we help others in a selfless manner, even though it may require some personal hardship or sacrifice, it is true yajna in life. A person who selfishly thinks of his/her own progress but does not care about others or even puts them down or hurt others in the process is an asura/rakshasa- human beings with the lowest type of personal values (also see mantra #11).

The fifth message of the mantra is that to promote happiness, peace and harmony in families, community, nations and the world, we should have some common principles that dictate their governance based on the principles of truth, honesty, common good, carinng, happiness, justice, equality and freedom. On the other hand, if in a family, community or a nation everybody has different set of moral principles; beliefs in different gods instead of One true God and different types of worship: different languages, dress and different standards of decency then that family, community or nation keeps experiencing lack of cohersive ness, sharing, harmony, peace and / or happiness.

The sixteh mesage of the mantra is that we should speak and converse with others with a sweet voice as well as honest, caring and mutually beneficial words and speech. May we not use dishones, harsh, bitter and loud insulting voice, words, speech or language. Remember, your words reflect on your own character, It is our words and voice which can make friends out of our enemies and enemies out of our dear friends.

The sevenh thing he mantra advises is that while individual persons living in a society have free will and freedom in their personal affairs and well-being, yet each individual must be subordinated to the common moral rules of society (as long as the rules are virtuous and just). All of us should share in fulfilling common goals and must accept responsibility for the welfare of the community and the prosperity of others because each member of a society is dependent upon othe rmembers of the society as well as nature and the environment.

Lastly, the mantra advises and implies that for happiness, progress and prosperity in our personal lives as well as that of our family, society and nation let us have big generous hearts, caring and respect for others. Let us never be content with our own well being alone,become narrow minded and selfish or have unfriendly behavior to wards others. Dear God guide and help us so that we may incorporate all advices described above into our hearts and minds as well as inspire and encourage others to do the same. Dear God with your grace may we succeed in making our personal lives, family, society and nation full of happiness, peace, prosperity and harmony.

(For benefits of virtuous conduct in life also see mantra # 7, 9, 19, 24, 25, 27 and 29)

To Be Continue....

आओ ! संस्कृत सीखें

समास प्रकरण - 37

गतांक से आगे....

केवली या सुप्-सुपा समास : जो समास अव्ययीभाव आदि चारों समासों की परिभाषा में नहीं आता वह केवल समास कहलाता है। कहीं कहीं सुबन्त का सुबन्त के साथ समास हो जाता है-

जैसे-पूर्वभूतः=भूतपूर्वः।

पूर्वम् अदृष्टः=अदृष्टपूर्वः ।

न एकः = नैकः ।

कहीं कहीं सुबन्त का तिङन्त के साथ भी समास हो जाता है-परि अभूषत्- पर्यभूषत्।

अनु वि अचलत् = अनुव्यचलत् ।

कहीं कहीं सुबन्त का इव अव्यय के साथ समास होता है व बीच की विभक्ति का लोप नहीं होता- वाससी इव= वाससीइव।

वस्त्रे इव= वस्त्रेइव ।

वागर्थौ इव= वागर्थाविव ।

जीमूतस्य इव= जीमूतस्येव।

उद्बाहुः इव= उद्बाहुरिव।

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

प्रेरक प्रसंग

कहानीकार सुदर्शन जी का धर्मानुराग

हिन्दी जगत् के सुप्रसिद्ध कहानीकार श्री सुदर्शनजी आर्यसमाज के पूज्य पुरुष और उत्साही सेवक थे। उन्होंने साहित्य तथा समाज की सेवा के लिए जो कष्ट झेले हैं उनकी कल्पना करके हृदय काँप उठता है।

रोहतक से जाटसभा का एक उर्दू साप्ताहिक निकलता था। इसका नाम जाट गजट (अब सम्भवत: उर्दू में नहीं छपता) था। प्रथम विश्वयुद्ध के आरम्भ होने पर चौ. लालचन्द और चौधरी छोटूराम ने इस साप्ताहिक के लिए श्री महाशय सुदर्शनजी की सेवाएँ प्राप्त कीं। सुदर्शनजी पहले उर्दू में ही लिखा करते थे। उनके आर्यत्व तथा उनकी साहित्यिक प्रतिभा के कारण ही इन हरियाणवी चौधरियों ने महाशय सुदर्शनजी को सम्पादक बनाया।

एक दिन रोहतक में एक ईसाई पादरी (जो विदेशी था) एक सड़क पर धुआँधार भाषण देकर ईसाईमत का प्रचार करते हुए पौराणिक हिन्दुओं की खिल्ली उड़ा रहा था। सुदर्शनजी को यह देखकर जोश आया। वे उस पादरी से थोड़ा दूर खड़े होकर वैदिक धर्म की विशेषताएँ बताकर बाइबल की शिक्षाओं की समीक्षा करने लगे। आप मिशन कॉलेज और मिशन स्कूल के ही विद्यार्थी रहे थे। बाइबल की परीक्षा में सर्वप्रथम आया करते थे, अत: आपको बाइबल का अच्छा ज्ञान था।

सुदर्शनजी का योग्यतापूर्ण भाषण सुनने के लिए वहाँ भारी भीड़ इकट्ठी हो गई। पादरी के पाँव उखड़ गये।

उसके किये-कराये पर पानी फेरने वाला यह कहाँ से आ गया? उसे पता लग गया कि यह जाट गजट का आर्यसमाजी सम्पादक है। वहाँ का डिप्टी कमिश्नर भी उन दिनों अंग्रेज था। बात उस तक पहुँच गई। किसी बहाने से जाट गजट से बहुत बड़ी राशि प्रतिभूति (सिक्योरिटी) माँगी गई। अभियोग चलाया गया। चौधरी लालचन्द, चौधरी छोटूराम ने जाट गजट पर इस प्रहार के कारण का पता लगा लिया। तब इन चौधरियों ने शासन से स्पष्ट रूप से कहा आप हमसे सेना के लिए जाट जवान भी माँगते हैं और हमारे पत्र-प्रकाशन में विघ्न भी डालते हैं। ये दोनों बातें कैसे चल सकती हैं? डिप्टी कमिश्नर ने कहा कि जाट गजट के प्रकाशन में कोई अड़चन नहीं डाली जाएगी। कोई प्रतिभूति (सिक्योरिटी) नहीं माँगी जाएगी। आप लोग अपना सम्पादक बदल दें। सुदर्शनजी को हटा दें।

चौधरियों ने बड़े स्वाभिमान, धर्म-निष्ठा तथा दृढ़ता का परिचय दिया। वे श्री सुदर्शनजी को हटाने की शर्त मानने को तैयार न हुए। इस घटना के ये दोनों पक्ष सब आर्यों के लिए बड़े प्रेरणाप्रद हैं। यह घटना हमें श्री पण्डित सुदर्शनजी की धर्मपत्नी ने 1975 ई. में सुनाई। तब हम सुदर्शनजी के जीवन की सामग्री की खोज के लिए उनके घर बम्बई गये थे।

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

जनवरी-फरवरी में होगा आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के अन्तर्गत

वार्षिक नैतिक शिक्षा परीक्षा का आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद् दिल्ली से सम्बद्ध/असम्बद्ध दिल्ली स्थित आर्य विद्यालयों जिनमें नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में लागू किया गया है, के सभी विद्यार्थियों (कक्षा-1 से 12 तक) की नैतिक शिक्षा परीक्षा का आयोजन जनवरी-फरवरी मास में किया जाएगा। अत: सभी विद्यालयों से निवेदन है कि यदि आपके विद्यालय में नैतिक शिक्षा का कोर्स अभी तक पूरा न हो हुआ हो तो शीघ्र पूरा करा दें तथा अपने विद्यालय के विद्यार्थियों की संख्या कक्षावार सूची बनाकर यथाशीघ्र भेजे दें जिससे संख्यानुसार विद्यालयों को प्रश्नपत्र भेजे जा सकें। सभी विद्यालयों की परीक्षा एक ही दिन एक ही समय सम्पन्न होगी।

- सुरेन्द्र रैली, प्रस्तौता (9810855695)

जेल में हुआ वैदिक प्रवचन, भजन एवं सत्संग का आयोजन
कैदियों को कम्बल बांटे गये

आर्य समाज जिला सभा कोटा द्वारा केन्द्रीय कारागार कोटा में वैदिक सत्संग, भजन एवं प्रवचन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. आर. के. तंवर ने कैंसर सम्बन्धी जानकारी देते हुए कहा कि तंबाकू से दूर रहें। शराब, मांसाहार एवं अधिक मात्रा में मसालों के सेवन से कैंसर होता है। विशिष्ठ अतिथि श्रीमती सरिता रंजन गौतम ने अपने उद्बोधन में कहा कि शिक्षा जीवन को बदलने वाली होती है इसलिए जहां से भी शिक्षा की बातें मिलें ग्रहण करें। वैदिक विद्वान आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने कहा क्रोध पर नियंत्रण रहें, अपने जीवन में नये विचारों का समावेश करें। वेद दुरित अर्थात् बुरे विचारों से दूर रहकर सद्विचारों को ग्रहण करने का आदेश देता है। जिला सभा प्रधान एवं कार्यक्रम अध्यक्ष अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि यहां रहकर अपने मन को शांत करें, चित्त को प्रसन्न रखें, योग करें एवं अच्छे कर्म करने का संकल्प लें। आर्य समाज कोटा की ओर से इस अवसर पर जेल बंदियों को कम्बल बांटे गये। जेल की लाइब्रेरी के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित महाग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया गया। कार्यक्रम के अन्त में बन्दियों ने गायत्री मंत्र का उच्चारण किया व जेल अधीक्षक सुधीर प्रकाश पुनिया ने आर्य समाज का कंबल वितरण एवं वैदिक सत्संग के आयोजन के लिए आभार व्यक्त किया। शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। *-अर्जुन देव चड्ढ़ा, प्रधान*

वैदिक जीवन शैली से हृदय रोगों से बचा जा सकता है -श्वेत केतु

21st india conference of waves व भारती विद्या भवन दिल्ली के तत्त्वावधान में वैदिक ज्ञान के व्यहारिक पक्ष विषय सरकार की हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य एवं आर्य समाज बिहारी पुर व अनाथालय के पूर्व मंत्री डॉ. श्वैत केतु शर्मा ने वैदिक जीवन शैली से हृदय रोग चिकित्सा का वैज्ञानिक चिन्तन विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।

डॉ. शर्मा ने कहा कि विश्व में हृदय रोगियों की संख्या 43% से अधिक हो रही है तथा सर्वेक्षण के आधार पर प्रत्येक 25वां व्यक्ति हृदय रोग से पीड़ित हो रहा है, इसका प्रमुख कारण प्राकृतिक नियमों को तोड़ने का दंड मात्र है। डॉ. शर्मा ने आयुर्वेद व वेदों के आधार पर विषय का विस्तृत चिन्तन प्रस्तुत करते हुये कहा कि धूम्रपान, गुटका,तम्बाखू, हुक्का, शराब, मांसाहार आदि से दूर रहना हृदय रोगों से बचाता है। *- मन्त्री*

वैदिक विदुषी की आवश्यकता

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित किए जाने वाले माता अमृतबाई कन्या संस्कृतकुलम् के संचालन एवं व्यवस्था के लिए आर्ष पाठ विधि से शिक्षा प्राप्त विदुषी महिला की आवश्यकता है। संस्कृतकुलम में समस्त व्यवहार संस्कृत भाषा में ही किए जाते हैं। अत: संस्कृत भाषा/व्याकरण का पूर्ण पारंगत अभ्यर्थी जो दिल्ली में रहकर निरन्तर अपनी सेवाएं प्रदान कर सके, अपना आवेदन पत्र सभी सम्बन्धित प्रमाणपत्रों की प्रति के साथ 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 पर भेज देवें या aryasabha@yahoo.com पर ई-मेल करें। *- महामन्त्री*

निर्वाचन समाचार

उ.-पश्चिम वेद प्रचार मण्डल, दिल्ली

प्रधान	-	श्री सुरेन्द्र आर्य
महामन्त्री	-	श्री जोगेन्द्र खट्टर
कोषाध्यक्ष	-	श्री व्रतपाल भगत

आर्य समाज खेड़ा अफ़गान, सहारनपुर

प्रधान	-	श्री आदित्य प्रकाश गुप्त
मन्त्री	-	श्री राजेश कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष	-	श्री अमित आर्य

आर्यसमाज जहांगीरपुरी के नए भवन का उद्घाटन

यज्ञ - प्रात: 9:30 बजे **उद्घाटन** - प्रात: 11 बजे **ऋषि लंगर** - 1 बजे

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं समस्त आर्य जनों की सूचनार्थ है कि आप सभी के सहयोग से आर्यसमाज जहांगीर पुरी नई दिल्ली के लिए क्रय किए गए भवन - के.- 1046 का उद्घाटन समारोह रविवार 4 फरवरी, 2018 को प्रात: 9:30 बजे यज्ञ के साथ आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर सामूहिक एकरूप यज्ञ, भजन एवं शोभा यात्रा का भी आयोजन किया जाएगा।

ज्ञातव्य है कि आर्य समाज जहांगीर पुरी लगभग 40 वर्षों से बिना भवन के ही क्षेत्र में वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार एवं आर्यसमाज की गतिविधियां संचालित रहा है। अत: आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं एवं अपना सहयोग प्रदान करें। जल्दी ही सभा के निर्देशन में आर्यसमाज के इस नए भवन का निर्माण कार्य आरम्भ किया जाएगा। *- रामभरोसे आर्य, मन्त्री*

वैदिक विद्वानों, लेखकों एवं विचारकों से हार्दिक निवेदन

आर्यजगत के समस्त आर्य विद्वानों, लेखकों एवं विचारकों से निवेदन है कि निम्नलिखित विषयों पर अपने शोधपूर्ण व प्रमाणित लेख आर्य सन्देश में प्रकाशनार्थ प्रेषित करें। आपके लेखों को आपके नाम व पते सहित आर्य सन्देश में प्रकाशित किया जाएगा तथा पुस्तक रूप में प्रकाशित भी किया जाएगा। आपसे विशेष निवेदन है कि यदि आप किसी बात की पुष्टि के लिए किसी पुस्तक से कोई उद्धरण लेते हैं तो उस पुस्तक का नाम, प्रकाशक एवं पृष्ठ सं. अवश्य लिखें। कृपया अपना लेख ए-4 साईज के प्लेन कागज पर 1000 से 1500 शब्दों में साफ-साफ लिखें/कम्प्यूटर से टाईप कराकर भेजें। कृपया एक बार में केवल एक विषय पर लिखें। विषय वस्तु को केन्द्र में रखते हुए सकारात्मक लिखें। भविष्य में आपके लेखों को प्रवचनों के लिए भी प्रयोग किया जा सकता है, अत: मौलिकता और प्रमाणित बनाए रखें। विषय इस प्रकार हैं-

1. एकेश्वरवाद
2. त्रैतवाद का सिद्धान्त
3. पुनर्जन्म का सिद्धान्त
4. कर्मफल सिद्धान्त
5. वेद परमात्मा का ज्ञान है
6. वेद अपौरुषेय है
7. वेद और विज्ञान
8. महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं उनका जीवन
9. महर्षि दयानन्द एवं उनके कार्य
10. महर्षि दयानन्द सरस्वती व सत्यार्थ प्रकाश

आप अपने लेख निम्न पते पर भेजें अथवा ईमेल करें -

सम्पादक, साप्ताहिक आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
Email : aryasabha@yahoo.com

सत्यार्थ प्रकाश कम कीमत पर उपलब्ध कराने हेतु साहित्य प्रचार यज्ञ में आहुति देने वाले महानुभावों की सूची

गतांक से आगे -		17. आर्यसमाज पंजाबीबाग(प.)	11000
13. सर्वश्री राहुल ज्ञानेश्वर	2011	18. अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ	11000
14. डॉ. जे. एस. बालियान	1100	19. ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट	21000
15. डॉ. अमित कुमार	2000	20. आर्यसमाज मालवीय नगर	3100
16. प्रणव आर्य	5100		- क्रमश:

आप भी पुस्तक मेले में सत्यार्थ प्रकाश अल्प मूल्य पर देने के लिए अपनी ओर से सहयोग प्रदान करें। 100 सत्यार्थ प्रकाश 10-10 रुपये में वितरित करने के लिए 2000/- रुपये सहयोग राशि की आवश्यकता है। अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अपने परिवार, आर्यसमाज और अपनी संस्था की ओर से अधिक सहयोग राशि भेजकर सत्यार्थ प्रकाश को जनसाधारण तक अधिकाधिक संख्या में पहुंचाने के लिए सहयोग दें। कृपया अपनी दान राशि नकद/चैक/बैक ड्राफ्ट के माध्यम से **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है। *- महामन्त्री*

Arya Bride

Suitable match for Arya Punjabi Handsum , fair boy, never married 5'10", DOB 7-7-75, 23:45 hrs. Delhi. B.Com (D.U), Professional in BMS,Own settled Electronic business (a Pvt Ltd Comp.) Income 6 Lacs p.a. Own House. Seeks culture & respectable family. No dowry & Mail girls profile and photo at **deep5914@gmail.com**. Tel - 9810414037. Advt.

आर्य समाज खेड़ा अफ़गान का 120वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज खोड़ा अफ़गान, सहारनपुर (उ.प्र.) के 120वें वार्षिकोत्सव पर व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन 17 से 18 मार्च 2018 को किया जा रहा है। इस अवसर पर आचार्य कर्मवीर जी अजमेर से श्री वेदपाल आर्य भजनोपदेशक सिनौली जनपद बागपत एवं अनेक वैदिक विद्वान शंका समाधान करेंगे।

- राजेश कुमार आर्य, मंत्री

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 8 जनवरी, 2018 से रविवार 14 जनवरी, 2018

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 11/12 जनवरी, 2018

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 10 जनवरी, 2018

फाल्गुन कृष्ण 10 तद्नुसार शनिवार 10 फरवरी, 2018

भव्य भजन संध्या एवं प्रेरक मार्गदर्शन

यज्ञ : सायं 3 बजे **भजन संध्या :** सायं 4 बजे **प्रीतिभोज** : सायं 7 बजे

दक्षिण दिल्ली	उत्तर पश्चिम दिल्ली
आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी के सहयोग से	आर्यसमाज रोहिणी सै.-7 के सहयोग से
दशहरा ग्राउण्ड	**हनुमान पार्क, रोहिणी, सै.8**
श्रीनिवासपुरी, नई दिल्ली-65	पैट्रोल पंप के सामने, दिल्ली-85

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सिद्धान्तों एवं आर्यसमाज की मान्यताओं को जनमानस तक पहुंचाने में सहयोगी बनें।

-: निवेदक :-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल, पश्चिम दिल्ली वेद प्रचार मंडल, उत्तरी प. दिल्ली वेद प्रचार मंडल एवं समस्त आर्य संस्थाएं

प्रतिष्ठा में,

लगातार बढ़ रहे हैं आर्यसमाज YouTube चैनल के दर्शक

44 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा अब तक

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।

यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।

यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में कार्यकर्ता पारिवारिक परिचय एवं पिकनिक

26 जनवरी, 2018 (शुक्रवार)

स्थान : कृष्णा फार्म (पहाड़ी के ऊपर)

अंसल गोल्डन हाइट्स, सोहना (गुड़गांव)

प्रात:राश, दोपहर का भोजन, सायंकालीन जलपान एवं खेलकूद प्रतियोगिताएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं सहयोगियों से निवेदन है कि कार्यक्रम में पहुंचने हेतु अपने नाम सभा उप प्रधान एवं कार्यक्रम संयोजक श्री ओम प्रकाश आर्य जी (9911155285) के सम्पर्क करें।

- विनय आर्य, महामन्त्री

देश और समाज विभाजन के षड़यन्त्र का पर्दाफास

आओ! जानें मनुस्मृति का सच

स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

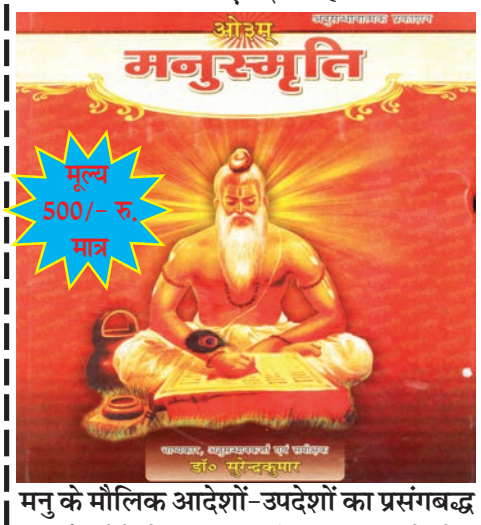

मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।

मूल्य : ~~600~~/- 500/-

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड,

नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह